नर्मदा क्षिप्रा सिंहस्थ लिंक परियोजना

निर्माण का घटनाक्रम

- नर्मदा जल से क्षिप्रा नदी को पुनर्प्रवाहित करने के मा. मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के मूल विचार को नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष/प्रमुख सचिव श्री रजनीश वैश प्राधिकरण इंजिनियरों के साथ विचार विमर्श कर एक व्यावहारिक परियोजना का स्वरूप दिया।
- नर्मदा घाटी विकास विभाग की 08 अगस्त 2012 को आयोजित समीक्षा बैठक में मा. मुख्यमंत्रीजी ने ''नर्मदा क्षिप्रा सिंहस्थ लिंक परियोजना'' के नाम से इस परियोजना के निर्माण का अनुमोदन किया। मुख्यमंत्रीजी ने इस परियोजना को लगभग 1 वर्ष की अवधि में पूरा करने की अपेक्षा व्यक्त की।
- नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण द्वारा इस दिशा में त्वरित पहल करते हुये परियोजना निर्माण की निविदायें 27 अगस्त 2012 को आमंत्रित की।
- नर्मदा नियंत्रण मण्डल की मा. मुख्यमंत्रीजी की अध्यक्षता में आयोजित 43 वीं बैठक में दिनांक 12 अक्टुबर 2012 को परियोजना निर्माण एजेन्सी का अनुमोदन किया गया।
- परियोजना निर्माण के लिये रू. 432 करोड की प्रशासकीय स्वीकृति 19 अक्टुबर 2012 को जारी करते हुये 05 नवम्बर 2012 को कार्य का अनुबंध किया गया।
- भारत के पूर्व उप प्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आड़वाणी और मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा इन्दौर जिले के ग्राम उज्जैनी के निकट क्षिप्रा उद्गम स्थल पर 29 नवम्बर 2012 को परियोजना कार्य का भूमि पूजन सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर उज्जैन में एक विशाल जनसभा आयोजित की गई। इस अवसर पर मुख्यमंत्रीजी ने कहा कि नर्मदा क्षिप्रा सिंहस्थ लिंक परियोजना के बाद मालवा की कालीसिंध, गम्भीर और पार्वती नदियों को भी प्रवाहमान बनाने की योजनायें लागू की जायेंगी।

परियोजना का स्वरूप

परियोजना के अंतर्गत ओंकारेश्वर वृहद सिंचाई परियोजना नहर प्रणाली के अंतर्गत सिसलिया जलाशय से नर्मदा का 5 क्यूमेक्स (5 हजार लीटर प्रति सेकण्ड) जल उद्वहन कर एम.एस. पाईप्स के माध्यम से परिवहन कर 47 कि.मी. दूर इन्दौर जिले में उज्जैनी ग्राम के निकट क्षिप्रा के उद्गम स्थल पर प्रवाहित किया गया है। परियोजना कार्य के मुख्य चरण निम्नानुसार है :-

- परियोजना के अंतर्गत 1.8 मीटर व्यास और 12 मीटर लंबाई के कुल 3788 नग एम.एस. पाईप्स को सिसलिया जलाशय से क्षिप्रा उद्गम स्थल तक 47 किलोमीटर लंबाई में स्थापित किया गया है।
- दिनांक 27 अक्टुबर 2013 को परियोजना की पाईप लाईन की निकासी अजमेर-खण्डवा रेल मार्ग के नीचे से केवल 6 घण्टे की अवधि में विशेष तकनीक के माध्यम से पूर्ण की गई।
- जल उद्वहन के लिये सिसलिया तालाब, गवालू, भेरूघाट पर पम्पींग स्टेशन स्थापित किये गये हैं। पम्पींग स्टेशनों द्वारा कुल 348 मीटर नर्मदा जल का उद्वहन किया जायेगा।
- नर्मदा और क्षिप्रा के धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को ध्यान में रखते हुये नर्मदा और क्षिप्रा के ग्राम मुण्डला दोसदार उज्जैनी स्थित संगम स्थल को विशेष डिजाईन अनुसार आकर्षक पर्यटक स्थल का स्वरूप दिया गया है। यह व्यवस्था की गई है कि यहां श्रद्धालु स्नान का लाभ उठा सकें।

मालवा अंचल को परियोजना के लाभ

- लंबे समय से जल प्रवाह के संकट से जूझती क्षिप्रा नर्मदा के जल से पुनर्प्रवाहित होगी। इससे क्षिप्रा अंचल के आस-पास के तालाब पुनर्जीवित होने से ग्रामीण आबादी को लाभ मिलेगा।
- क्षिप्रा में प्रवाहित जल से उज्जैन तथा देवास शहरों सहित क्षिप्रा अंचल में बसे 250 से अधिक गांवो को पीने का पानी सुलभ होगा।
- उज्जैन, देवास एवं पीथमपुर सहित उपनगरीय क्षेत्र के अनेक छोटे बडे उद्योगों को जल की आपूर्ति की जा सकेगी। औद्योगिक विकास होने से उद्योग क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढेंगे।
- वर्ष 2016 में उज्जैन में आयोजित होने वाले सिंहस्थ महापर्व तथा भविष्य के सिंहस्थ पर्वो के लिये पर्याप्त जल सुलभ कराया जा सकेगा।
- पुनर्प्रवाहित होने से क्षिप्रा अंचल में गिरता भू-जल स्तर स्थिर होकर उसमें बढोत्तरी होगी। इससे कुंये-तालाब पुनर्जीवित हो जायेंगे। कुयें तालाबों पर निर्भर कृषि को लाभ मिलेगा।
- उद्योग और कृषि क्षेत्र विकसित होने से अंचल का आर्थिक विकास होगा तथा रोजगार के अवसर बढेंगे।
- क्षिप्रा प्रवाहमान होने से अंचल का वन तथा पर्यावरण सुधरेगा।

विशेष

- भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने सर्वप्रथम देश की नदियों को जोडने का विचार दिया था। नर्मदा क्षिप्रा सिंहस्थ लिंक परियोजना पूरी कर मध्यप्रदेश उस विचार को मूर्तरूप देने वाला पहला प्रदेश बन गया है।
- नर्मदा से लगभग 400 मीटर ऊँचाई पर मालवा के पठार में नर्मदा का जल विंन्ध्याचल की दुर्गम पर्वतमालाओं से होकर पहुँचाना अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य था। इतनी बडी परियोजना को 14 माह की अवधि में पूरा हो जाना मध्यप्रदेश में बड़ी परियोजनाओं के निर्माण इतिहास में एक रिकार्ड है।